भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 29 अंक : 5	15.9.2006 शुक्रवार (सितंबर - अक्तुबर)	प्रति अंक : 10.00

आओ,
दिवाली के दिनों में 'प.पू. काकाजी की विभावना'
प.पू. काकाजी के शब्दों में पढ़ें... समझें... अपनाएँ !

'अंतर्धान हुए नहीं हरि आप , गुणातीत से रहे प्रगट।'

सर्वावतारी श्रीजी महाराज ने गुणातीत ज्ञान का यह रहस्य, मानव जीवन की उषा और संध्यापूजा की भांति

अनमोल बख़्शिश – गुणातीत सत्पुरुष के रूप में पृथ्वी पर आत्यंतिक कल्याण के लिए अखंड ही प्रगट रखा है।

इसी सनातन **गुणातीत ज्ञान के नवनीत और रहस्य** को

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और **संतवर्य योगीजी महाराज** ने केवल करूणा करके

सभी को अपने जीवन और कार्य द्वारा - **दिव्य कुटुंब की भावना के रूप में** सरलता से **समझाया**

और

अक्षर-पुरुषोत्तम की युगल उपासना के रूप में मूर्तिमान भी किया...

प.पू. योगीजी महाराज ने सदैव सुखी रहने और जीतेजी ही अक्षरधाम का सुख लेने के लिए

गुणातीत ज्ञान का यह नवनीत पूरे समाज को-जाहिर में भी बांटा!

सच्चे संत के प्रसंग से त्यागी या गृहस्थी **हर कोई आसानी से (यह) सिद्ध कर सकता है –**

यह बात हमारे गुणातीत समाज ने यानि कि – प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी,

प.पू. काकाजी, प.पू. साहेब, प.पू. बा और प.पू. बेन वगैरह ने मिल कर

देश-विदेश में स्पष्ट रूप से साबित करके भी दिखा दी।

...तो, सभी अपने आप पर यह लागू करें

और

नए उत्साह और जोश से, उमंग से, नवीन श्रद्धा और संकल्प से -

यह दिव्य गुणातीत ज्ञान का रहस्य जीवन में उतार कर दृढ़ करें।

[**खूब समझ रखें कि –**]

- ***सत्संग का विकास करना आसान है, लेकिन सुहृद्भाव से उठाव लेना कठिन है।***
- ***हजारों को सत्संग कराना आसान है, लेकिन अल्प संबंध वाले पाँच मुक्तों के पास सेवकभाव से वर्तना अति कठिन है।***
- ***समग्र का समर्पण करना आसान है, लेकिन अल्पसंबंध वाले मुक्तों की क्रिया व स्वभाव जँचाना खूब कठिन है।***
- ***चौबीस घंटे देह की कसनी सहनी आसान है, लेकिन मुक्तों के पास सरल वर्तना अति कठिन है।***
- ***प्रभु भजने नात, जात, लोक – सब छोड़ना आसान है, लेकिन मुक्तों के पास खूब मर्यादा रख कर सुहृद्भाव से काम करना कठिन है।***
- ***ध्यान - भजन करना आसान है, लेकिन अंतःकरणपूर्वक महिमा से -रांकभाव से मुक्तों के गुणगान गाना बहुत कठिन है।***

'भगवदी' गणेश है। उन्हें आगे रख कर काम करें। इससे महाराज सहायरूप होंगे।

'मैं उनका प्रकाश हूँ' ऐसा महाराज का अनुसंधान पल पल - श्वासोच्छवास अखंड रहना चाहिए।

सो, समकक्षा के भिन्न प्रकृति वाले दो भगवदीओं के साथ रसरूप होकर मैत्रीभाव दृढ़ करें।

एक-दूसरे की क्रिया और स्वभाव को स्वीकारें

और

ऐसी प्रेमभावना को व्यापक बनाएँ;

जिससे कि – हर जगह सच्चे अध्यात्म कर्मयोगी बन कर रहें

और... जहाँ भी हों -जहाँ भी जाएं-रहें और काम करें वहाँ माहात्म्यपूर्ण और आनंदपूर्ण ही रह कर

अक्षरधाम का अखंड सुख लेते रहें, लेते हो जाएं और अन्यों को भी दें...

तो आओ, आओ...

हम सभी ऐसा ब्रह्मयज्ञ अखंड करते रहें

और

अन्य सभी को भी सांझे दिल के रूप में साथीदार एवं भागीदार बनाएं।

गुणातीत ज्ञान का यह रहस्य बड़े पुरुषों ने अपने जीवन में सिद्ध किया हुआ ही है...

तो, सभी के ऐसे प्रज्ञाचक्षु सरलता से खुलते जाएं यही शुभाशीष...

मंगलमय पर्वों के साथ आए गुणातीत समाज के पर्व...

भगवान स्वामिनारायण ने 'गुणातीत स्वरूप' को पृथ्वी पर अखंड प्रगट रख कर समग्र मानवजाति को अति अनमोल बख़्शिश दे दी है। मानो आश्रित चैतन्यों की रक्षा के लिए अभय वरदान देकर मौज लुटा दी! कल्पना से परे की श्रीजी महाराज की कैसी अपार करुणा और प्रीति?

फलस्वरूप हमें सनाथ रखने – निर्भय और निश्चिंत बना कर सुखी करने ही प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी प.पू. प्रमुखस्वामिजी, प.पू. महंतस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई जैसे सांगोपांग प्रभु प्रगटाए '**गुणातीत संत**' आज पृथ्वी पर विद्यमान हैं।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के प्रागट्य की **शरद्पूर्णिमा** के ऐतिहासिक दिन पर ही गुणातीत स्वरूप **प.पू. दिनकरभाई की जन्म जयंती** तिथि के मुताबिक है...

दिनकर अर्थात् 'सूर्य'... सूर्य अपने आप में स्वतेज एवं पूर्णता का प्रतीक है। तभी तो प.पू. दिनकरभाई के सान्निध्य में हर एक को सूर्य समान संत यानि – प.पू. काकाजी के दिव्य अस्तित्व की झांकी मिलती है। उनके मुखारविंद पर प.पू. काकाजी का नूर चमकता है। उनके सान्निध्य में जीव मात्र परम निश्चिंतता व आनंद का अनुभव करता है। वर्षों पहले पत्रों में प.पू. काकाजी अपना नाम 'दिनकर' लिखा करते, जबकि तब तो प.पू. दिनकरभाई प.पू. काकाजी के संपर्क में भी नहीं आए थे। यह आश्चर्य की बात कहें या प.पू. काकाजी का पूर्व निर्देश था कि प.पू. दिनकरभाई के रूप में वे हमारे बीच रहेंगे।

सच, साधुहृदय विभूति प.पू. दिनकरभाई का जीवन हम सभी के लिए अजोड़ गुरुभक्ति की मिसाल है। १९७३ के प्रथम मिलन में ही उन्होंने प.पू. काकाजी को मानो सर्वस्व सौंप दिया! मुश्किल से छः - सात बार ही उनकी प.पू. काकाजी से मुलाकात हुई होगी और... **स्थूल रूप से इतनी दूर रहते हुए भी बहुत ही कम समय में उन्होंने प.पू. काकाजी का अद्‌भुत सेवन किया।** प.पू. काकाजी भी उन पर खूब गौरव करते। **गुरु को अपने शिष्य पर नाज़ हो, इससे अधिक शिष्य के जीवन की धन्यता भला और क्या हो सकती है?**

मुक्तों को मानो प्रभु की राह पर अग्रसर करने गुरुहरि प.पू. काकाजी ने निमित्त पात्र पसंद किया और... सहज - सरल हृदय प.पू. दिनकरभाई ने प.पू. काकाजी द्वारा परोसे 'ब्रह्मरस' को पचा भी लिया!

शीतलता और दिव्यता के मूर्तस्वरूप प.पू. दिनकरभाई आज अपने संबंध मात्र से सब की चेतना में उजाला कर रहे हैं। संसारी होते हुए भी संसार से 'जलकमलवत्' अलिप्त रहा जा सकता है और संसार में रहते हुए भी प्रभु प्रगटाए जा सकते हैं, इस तथ्य को उन्होंने आज डंके की चोट पर प्रमाणित कर दिया। गृहस्थों के लिए तो एक अद्‌भुत आदर्श रखा ही; साथ - साथ सभी संतों, बहनों, युवकों के मन वे प्रभु की एक '**विभूति**' बन चुके हैं। यूं अनेक कल्याणकारी गुणों से सुशोभित होकर कई चैतन्यों की प्रगति कराने **अनुपम राहबर** बने हैं।

बाहरी दृष्टि से देखने पर प.पू. दिनकरभाई भले ही हमें एक '**विनम्र और सरल सद्‌गृहस्थ**' ही लगें, परंतु उनके पवित्र एवं निर्गुण आंदोलन हमारी चेतना को सीधे स्पर्श करके हमें प्रभु के रास्ते पर चलने जाग्रत कर जाते हैं। अखंड ब्रह्मभाव में लीन रहते हुए भी प.पू. दिनकरभाई भक्तों के व्यवहार में रसरूप होकर उनकी समस्याएँ भी हल करते हैं। यूं सद्‌भावना करा

कर धीरे-धीरे अपनी सेरेछाया में लेते हुए उन चैतन्यों को निर्वासनिक बना कर उन्हें प्रगट प्रभु की उपासना में रत कर देना उनका दिन - रात एक मात्र उद्यम है...

प.पू. दिनकरभाई वैसे खूब विचक्षण एवं बुद्धिचातुर्य के मालिक हैं... **तीव्र बुद्धिशाली व्यक्ति के लिए हर एक संजोग में सरलता पकड़े रखना कठिन से कठिन साधना है।** निजी गुण, ज्ञान, महत्ता, सामर्थी, स्टेटस - सब कुछ छिपा कर छोटे से छोटे मुक्त की भी प.पू. काकाजी के ही भाव से सेवा कर लेना - उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। सामान्यतः तो प्रभु की कृपा से हम में अगर थोड़ी-सी भी बरकत हो, तो व्यक्त-अव्यक्त रूप से हम इसे दिखाने की निरंतर कोशिश करते हैं... **हमारी हर क्रिया के पीछे एप्रीसियेशन एवं रेकग्निशन की छुपी चाहना रहती है।** जबकि **उसे दबा के रखना संत की सच्ची सामर्थी है।** प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप हमें चिदाकाश की इस भूमिका में रहते करना चाहते हैं...

दूसरी ओर – **प.पू. काकाजी के वचन की ओर रही प.पू. दिनकरभाई की निगाह हम सभी को अंतर्दृष्टि करने मजबूर कर देती है। प.पू. काकाजी** ने जब से **उन्हें पू. महेन्द्र बापु से दृढ़ मैत्री रखने कहा,** तब से आज तक – प.पू. काकाजी के शरीर छोड़ने के बीस साल बाद भी प.पू. दिनकरभाई उस वचन को लेकर 'पू. बापु' से निरंतर दृढ़ मैत्री बनाए रख कर जी रहे हैं... पुराने-नए मुक्त सभी जानते हैं कि प.पू. दिनकरभाई और पू. महेन्द्र बापु की प्रकृति एक - दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं। मानो जमीन-आसमान का फर्क है। पू. महेन्द्र बापु अत्यधिक तेज, तो दूसरी ओर प.पू. दिनकरभाई खूब शांत व नीरव व्यक्तित्व! इस बात में तनिक भी संदेह नहीं कि **पू. महेन्द्र बापु** भी प.पू. काकाजी का ही सर्जन हैं और... **१९८५** की **१ मई को पू. बापु** विदेश जाने ताड़देव से निकल रहे थे, तब प.पू. काकाजी ने विदा करते हुए बीच वाले कमरे के पास खड़े-खड़े उन्हें एक **ब्रह्मसूत्र** दिया कि – **'पू. दिनकरभाई के पास बिलकुल डमी बन कर वर्तना।'** यूं अपने ढंग से वे भी प.पू. काकाजी का ही कार्य करने-उन्हें राजी करने दिन-रात प्रयत्नशील हैं। पर, प्रकृति - स्वभाव में इतनी भिन्नता होने के बावजूद वे एक दूसरे के पूरक बन कर प.पू. काकाजी का ही कार्य अग्रसर रखने जो प्रवृत्त हैं, वह उनकी भावना सराहनीय ही नहीं, बल्कि हम सभी के लिए आदर्श है।

आज भोग - विलास एवं लौकिक सुख-समृद्धि से युक्त अमेरिका की धरती पर प.पू. दिनकरभाई और पू. बापु के सांझे पुरुषार्थ, भीड़ाभक्ति, भजन एवं प्रार्थना के फलस्वरूप संत और सत्संगप्रधान जीवन जीते युवकों और मुक्तों का मानो एक दिव्य परिवार विकास को पा रहा है। प.पू. दिनकरभाई के चरणों में हम यही प्रार्थना करें कि आप जैसी 'गुरुभक्ति' प.पू. काकाजी हम में भी प्रगटा दें...

प.पू. दिनकरभाई की जयंती के दूसरे ही दिन **२ अक्तुबर** को **दशहरा**! इस दिन श्री रामचंद्रजी ने असुर रावण का वध करके आसुरी शक्ति पर दैवी शक्ति के विजय की पताका लहराई थी। **श्रीजी महाराज ने असुरों पर विजय पाने की अपेक्षा उनके भीतर की आसुरी वृत्तियों का नाश करके उसमें प्रभु प्रगटा देने में विजय माना**! साथ ही बताया कि **हमारे किसी साधन या स्वप्रयत्न से आसुरी वृत्तियों-स्वभावों से छुटकारा नामुमकिन है।** उसके लिए तो उनके **प्रगट गुणातीत संतों का संबंध ही अनिवार्य है।** और...इसी हेतु गुरुहरि योगीजी महाराज ने मुमुक्षुओं पर कृपा करने प्रगट ब्रह्मस्वरूप **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** को **पार्षदी दीक्षा** देने **दशहरे** का **सांकेतिक दिन** चुना। यूं, गुणातीत समाज के लिए यह एक और मंगलमय-प्रार्थना करने का दिन है।

दशहरे से पाँचवे दिन **७ अक्तुबर को – शरद्पूर्णिमा**! हम सभी के अनादि गुरु **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन** – जब 'अमर गुणातीत भावना' का व्यक्तिस्वरूप-मूल अक्षरमूर्ति

गुणातीतानंदस्वामिजी का धरती पर प्रागट्य हुआ और... **इन्होंने चैतन्य के शुद्धिकरण के सारे साधना मार्ग पर सेरे लगा कर ऐसे संत के प्रति की सद्भावना में जीवों को निर्वासनिकभाव बख़्शिश दे दिया!** इसी मंगलकारी दिन गुरुहरि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन तथा प.पू. दिनकरभाई की जयंती तिथि!

पिछले वर्ष शरद्पूर्णिमा पर ही प.पू. गुरुजी ने एक रहस्य बताया कि –***'दीवाली यानि मौज! गुणातीतानंदस्वामी ने धरती पर आकर मौज लुटा दी। मौज का कोई मूल्य नहीं होता। सो, मैं तो इसी दिन को 'दीवाली' मानता हूँ।'*** खूब गहराई से इस बात को सोचने पर ख्याल आया कि पिछले तीन-चार साल से प.पू. गुरुजी हर साल दीवाली-अन्नकूट के कार्ड पर 'शरद्पूर्णिमा' की ही तारीख डालते हैं।

अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी अत्यधिक सामर्थी - ऐश्वर्य के धारक एवं पुरुषोत्तम नारायण के अखंड रहने का धाम होते हुए भी भगवान स्वामिनारायण के पाँच सौ परमहंसों के साथ एक सामान्य साधु की भाँति ऐसे सेवकभाव से वर्ते कि उनकी महिमा का तो किसी को रंचमात्र ख्याल आने नहीं दिया। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के बारे बात करते हुए प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि– **संत की सच्ची सामर्थी यही है कि वह अपना ऐश्वर्य - प्रताप छुपा कर 'लो प्रोफाईल' रह कर सभी का निजी बन कर रहे।** गुजरात के भाल प्रदेश में **गुरु गुणातीत** साठ संतों के कीचड़ से चिपके जूतों की गठरी अपने सिर पर उठा कर जो चले – यह प्रसंग गवाही देता है कि सभी के पास वे **कितने लो प्रोफाईल रहे होंगे? तभी तो सभी संतों ने उन्हें इतने अन्डर एस्टिमेट कर लिए!** और... **हम जब उस 'गुणातीत कुनबे' के कहे जाते हैं; तो हमें तो उसी राह पर चलना है।**

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का ऐसा एक और ऐतिहासिक प्रसंग है। **कालवाणी** की तीर्थ रूप धरती पर श्रीजी महाराज ने ५०० परमहंसों को एक साथ दीक्षा दी। आश्चर्य की बात यह कि स्वयं साकार ब्रह्म का अनादि स्वरूप होते हुए मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने रात को ५०० परमहंसों के विश्राम में जाने के बाद सारी रात दंडवत् करते हुए उन सभी परमहंसों के चारों ओर प्रदक्षिणा करी, क्योंकि अगले दिन तो सभी परमहंस स्वयं को सौंपे स्थान पर जाने के कारण अलग होने वाले थे। **अद्भुत सामर्थ्य - ऐश्वर्य, रिद्धि - सिद्धि के मालिक होते हुए भी मुक्तों की महिमा समझ कर स्वयं ने ऐसे रांकभाव से जीकर 'गुणातीत अस्मिता' का दर्शन कराया है!** इसे किस कक्षा का दासत्व, संबंध की अपार महिमा, निराकार अवस्था कहेंगे और क्या हमारी सीमित बुद्धि व मायिक चक्षुओं से उन्हें माप पाएंगे? धरती पर आ कर भक्ति, साधुता, सेवकभाव, संबंध की महिमा का सर्वोच्च आदर्श प्रस्थापित करने उन्होंने ऐसी जीवनशैली अपनाई कि समग्र साधक वर्ग युगों-युगों तक उनका परम ऋणी बना रहेगा।

इन प्रसंग का हम यदि मनन - चितंन करते रहेंगे, संबंध की ऐसी महिमा हमारे भीतर में प्रगटे उसके लिए दिल की सच्चाई से भजन - प्रार्थना करते रहेंगे, तो गुणातीत पुरुष तो आज गरजु बन कर लुटाने ही बैठे हैं। हमें **'कृपासाध्य'** स्वरूप मिले हैं। एक बात हमें कई बार कही गई है कि –***'आजे तो चारे कोर साकर पाथरेली छे.'*** अर्थात् – चारों ओर खुल्ले मैदान में ढेर सारी शक्कर ही बिछाई है। कहीं भी हाथ डालेंगे, शक्कर ही हाथ आएगी! ठीक उसी प्रकार हमें मिले प्रगट गुणातीत स्वरूप द्वारा ब्राह्मीशक्ति मौज में खुल्ली रख दी है। आज स्वर्ण मौका है। सो, गुरु गुणातीत के जीवन को मद्देनज़र रख कर लौकिक-अलौकिक चमक-दमक से प्रभावित हुए बिना हम आध्यात्मिक मार्ग पर ही अग्रसर रहें – वही सही अर्थ में 'शरद्पूर्णिमा' मनाई कही जाए...

और... इसी परंपरा के ऐसे **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी**

गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ स्वामीसेवकभाव का ही एक अनुपम संबंध बांध कर आज पल-पल जीवन जी रहे हैं। उनका छोटा-बड़ा प्रत्येक कार्य, उनके हर एक लीला चरित्र, उनका खाना-पीना, उठना-बैठना, हँसना, हमारे सुख-दुःख में शामिल होना – सब कुछ संबंध वाले मुक्तों के परम हित के लिए ही है।

संतों, युवकों, बहनों एवं अंबरीष मुक्त समाज को अपने निःस्वार्थ और निरपेक्ष प्रेम के अमृत धोध में झबो कर सभी की चेतना की प्रगति के लिए वे अविरत परिश्रम कर रहे हैं। संबंध में आए सब के जीवन का उन्होंने सूनापन दूर किया है। उदासी, उद्वेग, हठ, मान, ईर्ष्या की अग्नि से संतप्त जीवों को दर्शन, सेवा, समागम से अंतर में ठंडक देकर प्रभु मार्ग पर अग्रसर किया है। प.पू. स्वामिजी के अत्यधिक विचरण के बारे सुनने मात्र से हमें थकान लगने लगती है, तो उन्हें कितना परिश्रम पड़ता होगा, वो कल्पनातीत ही है... सच! गुणातीत पुरुषों की हमारे प्रति के अनहद् लगाव की कोई सीमा ही दिखाई नहीं पड़ती।

लेकिन, अनादि काल से मन, बुद्धि और माया हमें कई प्रकार से अपने प्रपंचों में फंसा कर शंका-आशंका में डाल कर ऐसे प्रभुधारक संत से दूर कराती आई है। ये भूलें हम अब ना दोहराए। प्रभुस्वरूप संत को भला हम से क्या स्वार्थ हो सकता है? इन्होंने तो **हमें परम सुखी करने दिन-रात की धुनी जमा रखी है।**

उनकी अपार करुणा को समझ कर **हम यदि उनकी किसी योजना में साथ दे दें**, तो वे हमारे भीतर के कुरुक्षेत्र का अंत तो लाएँगे ही; इससे भी अधिक **हमें स्वतंत्र एवं स्वाधीन बना कर लाचारी या हताशा में कभी रहने नहीं देंगे...**

समय खूब तेज रफ्तार से – मानो पंख लगा कर उड़ता जा रहा है। प.पू. स्वामिजी व ऐसे गुणातीत स्वरूपों ने समय - समय पर हमें जो सूझ दी है या उनकी जो हम से अपेक्षाएँ हैं, उसकी जुगाली करके दिल की सच्चाई से अब जीने लग पड़ने का समय है।

तो आइए, **दीवाली एवं नूतन वर्ष** के सुअवसर पर प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी द्वारा बताए ब्रह्मसूत्रों को अंतर की गहराई से पढ़ें और भीतर में टटोल कर यूं जीने की तीव्र अभीप्सा – प्रार्थना करें...

चिंतन के लिए —

- ❖ साधु के पास पारदर्शक रहेंगे, तो साधु तुम्हारा पथदर्शक बनेगा।
- ❖ शंका रख कर बरबाद होना, उसकी अपेक्षा विश्वास रख कर लुट जाना बेहतरीन है।
- ❖ जब तक मन को ठेस लगती है, समझना कि हमें प्रभु के सिवा दूसरा आकार दिखाई पड़ता है।
- ❖ पसंद - नापसंद ऐसा कुछ नहीं; बल्कि **'जैसा - वैसा, जहाँ-तहाँ, जब-तब'** – उसे कहते हैं देहभाव का प्रलय।
- ❖ जगत के करोड़ों पंचविषय के सुख की अपेक्षा भगवान की मूर्ति का सुख अधिक है।
- ❖ जब तक रोग और दोष के प्रभाव का बोझ दिल में रहता है, तब तक निष्ठा ही नहीं है।
- ❖ भगवान द्वारा बुद्धियोग मिलने पर, बिना कोई क्षति के जीवन की शुरूआत होती है।
- ❖ सरलता और आत्मीयता सर्वोत्तम सेवा है।
- ❖ भजन करते हुए क्रिया करेंगे, तो अंतःकरण शुद्ध हो जाएगा।
- ❖ जब तक भजन करते हुए सेवा नहीं होगी, तब तक तुम्हारे दोष का सम्यक् दर्शन प्रभु कराएंगे नहीं।
- ❖ 'मैं' के दायरे में से निकलने के लिए भजन अनिवार्य है।
- ❖ **'दोष'** से अधिक – उससे करोड़ गुणा बंधनरूप **'गुण'** हैं।
- ❖ 'यह देह प्रभु का है' – ऐसा जब तक नहीं माना जाता; तब तक बालक बनने की यात्रा शुरू ही नहीं होती।

❖ बड़े पुरुष - सत्पुरुष को जिसका विश्वास हो उसे ही वे कसनी में लेते हैं।

❖ इंद्रियों का आहार शुद्ध नहीं हो, तो अंतर की प्रसन्नता नहीं मिलती।

❖ जब तक डॅस्टिनेशन - ध्येय स्पष्ट ना हो, तब तक भीतर का कुरुक्षेत्र विराम को पाएगा नहीं।

प.पू. काकाजी महाराज कई बार अपनी परावाणी में कहते कि – ***तमे आंधळा लोको शुं बोलवाना ?*** तब उनकी कही यह बात हमारे अहं को चोट पहुँचाती... पर, हकीकत में **हम सब इन चैतन्यदर्शी विभूतियों के सामने अंधे जैसे ही हैं।**

सारी बातों का निचोड़ यही है कि –

यदि हमें सुखी ही होना है,
तो हम भले ही सारी दुनिया के पास
अपनी बुद्धि को लगा-लगा कर
चालाकियाँ – लुकाछिपी खेलते हुए घूमते - फिरते रहें;
लेकिन, इतने अनुभव होने के बाद
एक जगह – भगवान व संत के पास तो
अपनी शापित बुद्धि का इस्तेमाल ना करें।

मन - बुद्धि के प्रवाहों में बहने के बजाय गुणातीत स्वरूपों एवं उनकी प्रसन्नता वाले व उनको मिले मुक्तों के जीवन को आदर्श बना कर जीने की मंगल शुरुआत करें। **हमारे मन का भरोसा ना करके प्रभु व संत का ही भरोसा हर संजोग में पकड़े रखें।** संत के पास हमारी समझदारी, हमारे गुण भूल कर - झीरो बन कर जीने का उद्यम करें। *'हमारे शुद्धिकरण दौरान महाराज ही मुक्तों को वर्ता रहे होते हैं, वर्ना वे मुक्त तो निर्दोष ही होते हैं'* – यूं मान कर संबंध वाले मुक्तों के प्रति बांधे अभिप्रायों की गांठे छोड़ें और प.पू. काकाजी को खूब पसंद 'मैत्रीभाव' के लिए उनसे हाथ बढ़ाएँ।

जिस तरह गुणातीत स्वरूपों ने केवल अपने गुरु के एक वचन को जीवन का आधार बना लिया, उनकी ओर सतत् नज़र रखी, इसी तरह हम भिन्न प्रकृति वाले 'भगवदी' के साथ 'मैत्री' करने हेतु अपने आप को ढाल दें और प्रगट प्रभु की आंतरिक प्रसन्नता प्राप्त करके **'गुणातीत अस्मिता'** प्रगटाएं – यही **दीवाली** एवं **नूतन वर्ष** पर प्रार्थना – अभीप्सा!

✡✡✡

अनुष्ठान शिविर...

मार्च - अप्रैल महीने से ही प.पू. पप्पाजी की नाजुक तबियत के समाचार आते रहते थे... प.पू. गुरुजी प.पू. पप्पाजी के दर्शन हेतु दो - तीन बार विद्यानगर गए... हम सभी देह से भले दिल्ली में रहते, परंतु जैसे ही फोन की घंटी बजती तो सब काँप जाते कि कहीं प.पू. पप्पाजी......! यूं सभी का मन प.पू. पप्पाजी की ओर लगा रहता... दूसरी ओर अक्षरनिवासी प.भ. नीलकंठभाई महेता की सुपुत्री की शादी १४ मई को वलसाड़ में होनी निश्चित हुई थी। दिल्ली - अमदावाद - मुंबई के मुक्तों ने मिलजुल कर यह शादी की जिम्मेदारी निभाई... इस व्यस्तता के कारण अब की १५ मई से धुन शुरु नहीं कर पाए। और...२१ मई की मंगल प्रभात से जपयज्ञ अनुष्ठान शिविर की शुरुआत हुई।

प.पू. गुरुजी हर बार की तरह सुबह ६:०० बजे ही सोफे पर बैठे तैयार मिलते। मानो हरिभक्तों की राह ही देख कर बैठे हों। सुबह सवा छः बजे से साढ़े छः बजे तक **प.भ. प्रभाकरजी प्राणायाम कराते**। साढ़े छः बजे ठाकुरजी के हॉल में सब इकट्ठे होते... 'उगती प्रभा' की प्रार्थना एवं **'स्वामिनारायण महामंत्र महिमास्तवन'** के बाद पैंतीस मिनिट धुन होती। एक भजन गाने के पश्चात् करीब साढ़े सात बजे से प.पू. गुरुजी **'ब्रह्मप्रवाह'** में से प.पू. काकाजी द्वारा लिखित पत्रों को खूब बारीकी

से समझाते... व्यवहार में व अध्यात्म के मार्ग में आते अवरोधों को दूर करने के सरल उपाय सरल भाषा में बताते। ठीक सवा आठ बजे विसर्जन प्रार्थना गाकर यह कार्यक्रम सम्पन्न होता और... पू. सुहृद्स्वामी द्वारा बनाए मूंग व सेवमुरमुरे का नाश्ता करके सभी अपने ऑफिस-दुकान या घर जाने रवाना होते।

पर २१ मई से ७ जून तक ही यूं कार्यक्रम चला, क्योंकि २८ मई को तो प.पू. पप्पाजी ने स्वधामगमन किया... ३० मई को प.पू. ललिताबा ने भी शरीर छोड़ दिया था... सो, ७ जून की सुबह प.पू. पप्पाजी की श्रद्धांजली सभा और सायं प.पू. ललिताबा की श्रद्धांजली की महापूजा करके अनुष्ठान शिविर संपन्न करी।

दूर-सुदूर बैठे हरिभक्त जो इस शिविर का लाभ नहीं ले पाए, वे प.पू. गुरुजी द्वारा दी गई अनमोल सूझ से लाभान्वित हो सकें–इस हेतु **'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'** के अंतर्गत मुमुक्षुओं तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं...

'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'

* मई - जून महीने की यह 'अनुष्ठान शिविर' एक **'रिफ्रेशर्स कोर्स'** है। जैसे स्कूल्स में वॅकेशन होती हैं, तब रिफ्रेशर्स क्लासिस निकलती हैं...

  कोर्स में से कहीं छूट गया हो, कुछ ध्यान में ना लिया हो, कुछ समझ नहीं आया हो, कुछ ओवरसाईट हो गया हो, कुछ होमवर्क उस समय नहीं कर पाए हों–वो सारा यह क्लासिस लेने से मेकअप हो जाता है। सो, यह एक रिफ्रेशर्स शिविर है।

* यह रिफ्रेशर्स शिविर इसलिए है कि हम सारी चीजें जो भूल गए हैं, अब दोबारा 'यू टर्न' लेकर फिर से शुरु कर दें... **कोई ये ना सोचे कि हमारा तो अब तक का समय बिगड़ा वगैरह...।** अगर आज से भी शुरुआत कर देंगे, तो जो प.पू. काकाजी देना चाहते थे वो सारा रिट्रोस्पॅक्टिव रिएम्बर्समेन्ट के साथ अपने आप हमारे आध्यात्मिक एकॉऊंट में जमा हो जाएगा।

* प.पू. काकाजी कहते कि **हजारों की भीड़ इकट्ठी हो, उसका कोई अर्थ नहीं है।** पर, **यदि पाँच भी सिंह पके हों–निष्ठा वाले सत्संगी पके हों, उसे सत्संग फैला मानना।**

  यहाँ कोई उत्सव हो, तो भले ज्यादा से ज्यादा १२०० - १५०० की ही गेधरिंग होती है, पर उसमें से ८० प्रतिशत से अधिक एक-दूसरे को करीब से पहचानते होंगे... **कुंभ मेले की तरह पचास - साठ हजार, लाख-दो लाख इकट्ठे होने से बड़प्पन नहीं।**

  सुरत के **श्री धनंजयभाई** ने बहुत अच्छी बात करी कि– **'यहाँ मास नहीं, बल्कि क्लास है !'**

* शेर आगे चलता रहेगा, लेकिन बीच-बीच में रुक कर पीछे मुड़ कर भी देखता रहता है। **पीछे मुड़ कर देखना यानि अंतर्दृष्टि करना कि कोई अंतःशत्रु हम पर हावी तो नहीं हो रहा?**

* **प्रगट की प्राप्ति होने के बाद आध्यात्मिकता के सारे आल्फाबॅट्स बदल जाते हैं।**

* हम सत्संग की बातें सुनते रहते हैं, बोलते भी रहते हैं, दूसरों को समझाने दोहराते भी रहते हैं ; पर, दरअसल हम दिल की सच्चाई से उन्हीं बातों का यकीन नहीं करते। प.पू. काकाजी ने स्वयं आजमा कर वो शुरुआत कराई... प.पू. पप्पाजी ने स्वयं वर्त कर, फिर ठोक-ठोक कर कहना शुरु किया।

* प.पू. पप्पाजी कहते–लाखों टन ज्ञान सत्संग में सुनते रहें या कहते रहें, उससे कोई चीज हल नहीं होने वाली। इसके बजाय पाँच ग्राम - दस ग्राम जितना भी ज्ञान यदि हम अपने वर्तन में लाएंगे, तो वो अधिक

है ; क्योंकि उससे हमारी जिंदगी संवर जाएगी।

- ✱ यह प्रगट का सत्संग अड़ौस - पड़ौस, बिरादरी-रिश्तेदारों को पसंद नहीं आता।
- ✱ यह सत्संग संसार छोड़ने का, संसार तोड़ने का, संसार उजाड़ने का तनिक भी नहीं है; बल्कि हमारे संसार में प्रभु को भर के संसार में मिठास प्रगटाने, अमरत्व देने का ये सत्संग है।
- ✱ प.पू. काकाजी कहते कि **सत्संग यानि – 'सत्पुरुष'! उनके साथ जितना हमने संबंध दृढ़ करा - उतना हमने सत्संग किया।**
- ✱ बड़े संत हमें कुछ कहते हैं, तो हम उनकी बात **ध्यान से सुन कर** इम्प्लीमॅन्ट करते ही नहीं।
- ✱ सत्संग में थोड़ी भी कसनी सहने हम तैयार नहीं होते और... प्रारब्धवश जगत में कितना ढोया करते हैं?
- ✱ अपना मन, अपनी बुद्धि, अपनी वृत्ति, भीतर का संसार - जगत छोड़ कर प्रथम स्थान संत का रख कर जीएं... वो सच्चा सत्संग किया कहा जाए।

प.पू. काकाजी ने **पू. हरिभाई साहेब** को एक बार **रेलवे स्टेशन** की बुकिंग ऑफिस **से डाक टिकिट** ले आने की आज्ञा करी थी!

पू. हरिभाई साहेब तो प.पू. काकाजी की आज्ञा से रेलवे स्टेशन पर डाक टिकिट लेने चले गए! लाईन में नंबर आने पर टिकिट देने वाले से डाक टिकट माँगी। पहले तो उसने उनकी बात अनसुनी कर दी। फिर दोबारा कहने पर आश्चर्य की बात यह हुई कि उसने पू. हरिभाई साहेब को ऑफिस के अंदर आने कहा और बताया कि कल ही हमने यहाँ ऑफिस के लिए डाक टिकिट मंगाई हैं; इस रजिस्टर में रखी हैं, आप देख लो। पू. हरिभाई साहेब ने रजिस्टर में से डाक टिकिट निकालीं, तो प.पू. काकाजी ने लिस्ट में जो - जो टिकिट लिखवाई थीं, वे उसमें से निकली! **हम यदि सत्पुरुष की आज्ञा बिना कोई शंका-आशंका किये मानते हैं, तो फिर प्रभु हमें ऐसे अनुभव भी कराते हैं।**

- ✱ **हम यहाँ आए हैं सत्पुरुष से संबंध करने,** उनके प्रति निगाह रख कर जीने के लिए और वे राजी हों वो करने। अपना अंदरयामी यानि – मन राजी हो, अपनी वृत्ति संतुष्ट हो – इस हेतु करी क्रिया 'काम' बन जाता है। वो सारा काम गधामज़दूरी कहा जाए। हम गधामज़दूरी खूब करते हैं, इतनी करते हैं कि देखने वाले को तरस आ जाए कि ओहो कितना काम करता है यह। पर, इससे हमारे प्रारब्ध व प्रकृति नहीं बदलते; क्योंकि हमारी नज़र सत्पुरुष की तरफ नहीं है।
- ✱ सत्पुरुष की प्रसन्नता पाने से अधिक, हमारे भीतर में यह चाहना छुपी होती है कि काम अच्छा - अप टु डेट हो जाए, ताकि उसमें नूक्स - कमी निकाल कर कोई टोकाटाकी नहीं करे। **दरअसल साधु को काम से कोई लेन - देन ही नहीं होती।** काम बिगड़ जाए या ना भी हो पाए, पर **हमने किस भावना से करा, वो वे देखते हैं।**
- ✱ हम साधु के प्रति के मायिकभाव के विचारों से यदि अपने मन को भरे रखेंगे, उसमें ही डूबे रहेंगे तो आख़िर साधु से हमारा संबंध टूटता जाएगा।
- ✱ **अपना प्यॉरीफिकेशन - शुद्धिकरण अपने कोई साधन, अपने बल से नहीं हो पाएगा।** पर प. पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसे **अतिशय बड़े पुरुषों को अतिशय निष्कामी, निर्लोभी, निर्मानी, निःस्वादी, निःस्नेही दिल की सच्चाई से मानेंगे तो हम भी वैसे ही बन जाएंगे।**
- ✱ हमें जो सत्संग मिला है, वो बाहर के विषय - रंग राग तो छुड़ा ही नहीं पाएंगे। बस, हमारा मन ही हमें सत्संग से अलग करा सकता है। हमारा मन

ही डांवाडोल करा सकता है।

* मुझे प.पू. काकाजी की कई क्रियाएं – कई बातें समझ नहीं आती थी, दिमाग में नहीं बैठती थी, पर मैं दिल से मानता था कि –

  'यह मेरे ही दिमाग की कोई गड़बड़ है; प.पू. काकाजी गलत हो ही नहीं सकते। भले ही मैं आज नहीं मान पाता – समझ नहीं पाता, पर उनकी सब क्रियाएं दिव्य ही नहीं, बल्कि वे जो कर रहे हैं – कह रहे हैं वही सच ठहरेगा।'

  बस यही साधना करनी पड़ती है।

* अगर हम संत को लोभी मानेंगे, तो हमारे भीतर से लोभ की वृत्ति कभी जाएगी नहीं।

* प्रगट के उपासकों के लिए इझीयेस्ट वॅ यही है कि अतिशय बड़े पुरुषों को निष्कामी, निर्लोभी, निःस्वादी, निर्मानी मानें। ऐसा साधक सर्व विकारों से रहित हो जाएगा। दूसरे भी रास्ते होंगे तो सही, पर वे खूब कठिन हैं।

* परमेश्वर के स्वरूप की निष्ठा जिसे हर संजोग में अचल रहे, वही '**पक्का हरिभक्त**' कहा जाए।

* हम सत्संग में काँच के बर्तन – मिट्टी के बर्तन की भाँति ना रहें, जो कि फट् टूट जाए या जिन्हें खूब संभाले रखना पड़े।

* **कसनी सहे बिना पिण्डीकरण हो ही नहीं पाएगा।** यहां तो हर प्रकार से खूब सुविधा है, पर ताड़देव – मुंबई में पू. ज्योति बहन, पू. तारा बहन, पू. हंसा दीदी, पू. देवी बहन आदि मुक्तों ने जो कसनी सही है, उसकी तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

✡✡✡

* अन्नकूटोत्सव *

दिनाँक २२ अक्तुबर, २००६, रविवार की सुबह

गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन – १०:०० से ११:१५

अन्नकूट आरती – ११:३० बजे

सपरिवार ईष्ट मित्रमंडल सहित पधारने आपको हार्दिक निमंत्रण है।

*** स्थान ***

श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, 'ताड़देव', काकाजी लेन,

स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार - ३, दिल्ली - ११० ०५२

आप सभी की जानकारी हेतु —

'**श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर**' एवं '**अक्षरज्योति महिला केन्द्र**' के फोन नंबर बदल गए हैं।

नए नंबर निम्न हैं –

- **श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर** : (011) 2730 1327, 4709 1281/82
  फॅक्स : (011) 4709 1280
- **अक्षरज्योति महिला केन्द्र** : (011) 2730 5199

भजन

(राग – कभी खुशी, कभी गम...)

आ... तेरी मूर्ति हो जीवन,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम....
आ.... आ.... आ.... आ....
खुशी जीवन की हो ना कभी कम, मुक्तों को दिव्य माने यदि हम, - २
तेरे अंतर की प्रसन्नता पाने
सीखें मन का असंग, रहें मुक्तों में बंध,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम।
खुशी जीवन की हो ना कभी कम, मुक्तों को दिव्य माने यदि हम,
तेरे अंतर की प्रसन्नता पाने
छोड़ें मन का कुसंग, रहें मुक्तों में बंध,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम।

दादुभाई के मंडल के, कहे हम हैं जाते,
'सर्वोपरि स्वामिनारायण', क्यों ना मान पाते,
आ... आ... ओ.....ओ....
दादुभाई के मंडल के, कहे हम हैं जाते,
'सर्वोपरि स्वामिनारायण', क्यों ना मान पाते,
ब्रह्मनियंत्रित सभी, मुक्त हैं जान लें, - २
सच्चे सुहृद सभी के बने हम,
सीखें मन का असंग, रहें मुक्तों में बंध,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम।

एक होकर जो, कुटुंबभाव से रहें हम,
कलियुग में सतयुग तू प्रगटाए,
आ... आ... ओ.....ओ....
एक होकर जो, कुटुंबभाव से रहें हम,
कलियुग में सतयुग, तू प्रगटाए,
चिंता सब छोड़ के, तेरा चिंतन करें, - २
हरदम रक्षा करता तू हर पल,
छोड़ें मन का कुसंग, रहें मुक्तों में बंध,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम।
खुशी जीवन की हो ना कभी कम, मुक्तों को दिव्य माने यदि हम, - २
तेरे अंतर की प्रसन्नता पाने
सीखें मन का असंग, रहें मुक्तों में बंध,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम।
आ... तेरी मूर्ति हो जीवन,
धाम, धामी और मुक्त, सत्य ये ही परम....

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	16.9.2006,	शनिवार	—	श्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(2)	दि.	17.9.2006,	रविवार	—	एकादशी, ब्र.स्व. योगीजी महाराज – स्मृति पर्व
(3)	दि.	18.9.2006,	सोमवार	—	ब्र.स्व. काकाजी महाराज – स्मृति पर्व
(4)	दि.	19.9.2006,	मंगलवार	—	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी और ब्र. स्व. भगतजी महाराज - स्मृति पर्व
(5)	दि.	23.9.2006,	रविवार	—	नवरात्रे प्रारंभ
(6)	दि.	1.10.2006,	रविवार	—	परम पूज्य दिनकरभाई का प्रागट्य दिन
(7)	दि.	2.10.2006,	सोमवार	—	**दशहरा**, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(8)	दि.	3.10.2006,	मंगलवार	—	एकादशी, व्रत
(9)	दि.	5.10.2006,	गुरुवार	—	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी अंतर्धान तिथि
(10)	दि.	7.10.2006,	शनिवार	—	**शरद्पूर्णिमा**, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन प.पू. दिनकरभाई की प्रागट्य तिथि
(11)	दि.	8.10.2006,	रविवार	—	ब्र.स्व.प.पू. जागास्वामिजी की जन्मजयंती
(12)	दि.	17.10.2006,	मंगलवार	—	एकादशी, व्रत
(13)	**दि.**	**19.10.2006,**	**गुरुवार**	**—**	**धनतेरस – दिल्ली - मंदिर में 'धनपूजा', सायं 6:00 से 8:00**
(14)	दि.	20.10.2006,	शुक्रवार	—	काली चौदस
(15)	दि.	21.10.2006,	शनिवार	—	**दीवाली**
(16)	दि.	22.10.2006,	रविवार	—	**अन्नकूटोत्सव** – वार्षिक स्नेहमिलन
(17)	दि.	23.10.2006,	सोमवार	—	**नूतन वर्ष – विक्रम संवत २०६३ प्रारंभ**
(18)	दि.	24.10.2006,	मंगलवार	—	**भैयादूज**
(19)	दि.	27.10.2006,	शुक्रवार	—	**लाभपंचमी**
(20)	दि.	2.11.2006,	गुरुवार	—	प्रबोधिनी एकादशी, तुलसी विवाह, व्रत
(21)	दि.	5.11.2006,	रविवार	—	**देवदिवाली**, श्री गुरुनानक जयंती

R.N.I. 28971/ 77

TO,

Air Mail

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine

Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :—

Printer, Publisher, Editor :—

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,

Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **Delux Offset Printers**

308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi